कैम्पस कनेक्ट

राम लाल आनंद महाविद्यालय का मासिक ई-न्यूज़लेटर

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | नई दिल्ली, फरवरी 2026 | वर्ष 4, अंक 28, पृष्ठ 4

टी–20 मैच में आरएलएसी ने मैत्रेयी कॉलेज को हराया

दीपक कुमार

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय और मैत्रेयी महाविद्यालय के बीच 9 नवंबर 2025 को एक दिवसीय टी–20 मैच हुआ। इस मुकाबले में रामलाल आनंद महाविद्यालय की टीम 70 रनों से विजयी हुई। डॉ. गंधर्व कौशिय ने बेहतरीन गेंदबाजी की। डॉ. सुरेन्द्र और डॉ. अरुण की अर्धशतकीय पारी ने जीत में अहम भूमिका निभाई।

रामलाल आनंद महाविद्यालय ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी की। पारी की शुरुआत अच्छी नहीं रही। पहले ओवर की तीसरी गेंद पर पहला विकेट गिर गया। ओपनर डॉ. विशाल गोस्वामी अपना विकेट गंवा बैठे। इसके बाद डॉ. पवन शर्मा 3 चौके के साथ 20 रन बनाए। डॉ. अंकित कुमार 5 छक्के और 3 चौके जड़ते हुए 46 रन बनाए और बीच के ओवर्स में पारी को संभाला। इसी क्रम में डॉ. अरुण कुमार ने 33 गेंदों पर 51 रन बनाए। डॉ. सुरेंद्र कुमार ने 19 गेंदों पर 55 रन की आतिशी पारी खेली। इस प्रकार आरएलएसी ने 20 ओवर मे पांच विकेट गंवाए। आरएलएसी ने दूसरी टीम को 227 रन बनाने का लक्ष्य दिया। इधर मैत्रेयी महाविद्यालय के ओपनर्स डॉ. अजय खंडाल और अनिल कुमार ने अच्छी शुरुआत की। दोनों की साझेदारी से 7.3 ओवर में 90 रन बने। सातवें ओवर की तीसरी गेंद पर पहला विकेट गिरा। गेंदबाज डॉ. गंधर्व कौशिय ने डॉ. अजय खंडाल का विकेट लिया और अपनी टीम को पहली सफलता दिलाई। मैत्रेयी महाविद्यालय की टीम के कप्तान डॉ. राहुल बिना खाता खोले डॉ. बृजेन्द्र का शिकार हो गए। बाद की पारी में डॉ. गंधर्व कौशिय ने एक के बाद एक विकेट गिराते गए और मैत्रेयी महाविद्यालय के टीम की कमर तोड़ दी। गेंदबाज डॉ. बृजेन्द्र का भी साथ मिला। इस प्रकार 17 ओवर में 157 रन की पारी खेल मैत्रेयी महाविद्यालय की पूरी टीम ऑल आउट हो गई।

डॉ. गंधर्व कौशिय को मैन को ऑफ द मैच चुना गया। डॉ. गंधर्व ने कुल 36 रन देकर 5 विकेट लिए थे तो डॉ सुरेन्द्र ने अपने चौके छक्के से लोगों का दिल जीता। डॉ. गंधर्व ने इस उपलब्धि के लिए अपनी रणनीति को जिम्मेदार बताया। आरएलएसी के कप्तान डॉ. रोशनलाल मीणा ने जीत का श्रेय पूरी टीम को दिया। इस मौके पर खिलाड़ियों की हौसला अफजाई के लिए आरएलएसी के शारीरिक शिक्षा विभाग के प्रो. प्रदीप शर्मा, दिल्ली विश्वविद्यालय के एनसीसी प्रभारी प्रो. संजय कुमार शर्मा, डॉ. कुलदीप सिंह आदि अनेक शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थी मौजूद रहे।



जीत के बाद आरएलएसी के खिलाड़ियों ने खुशी का इजहार किया।



रामलाल आनंद महाविद्यालय में गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में नशा मुक्ति, मताधिकार और स्वच्छता की दिलाई गई शपथ।

देश में अच्छा काम करने का लें संकल्प

अंशिका वर्मा

- वसंत पंचमी, पराक्रम दिवस और 77वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में आयोजन
- रामलाल आनंद महाविद्यालय में नशा मुक्ति, मताधिकार और स्वच्छता की प्रतिज्ञा

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद महाविद्यालय में वसंत पंचमी और पराक्रम दिवस पर 77वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में आयोजन हुआ। महाविद्यालय के एम्फीथिएटर में 23 जनवरी 2026 को हुए आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहें महाविद्यालय की गवर्निंग बॉडी के चेयरमैन डॉ. जिगर इनामदार ने राष्ट्र हित में व्यक्तिगत सामाजिक जिम्मेदारी पर बात की। उन्होंने कहा कि कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी से ज्यादा व्यक्तिगत सामाजिक जिम्मेदारी जरूरी है। कोई भी राष्ट्र अपने राष्ट्रीय चरित्र पर खड़ा रहता है। चरित्र बहुत गहरी बात है। सभी राष्ट्रीय चरित्र के लिए योगदान देने पर सोचने को मजबूर हों। साथ ही अगले वर्ष तक देशहित में एक अच्छा काम रोज करने का आज प्रण लें।

उन्होंने प्रिंसिपल इंटर्नशिप प्रोग्राम के तहत बच्चों के लिए बनाए जा रहे सामुदायिक शिक्षा के प्रोजेक्ट संस्कार का भी जिक्र किया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने गणतंत्र दिवस, वसंत पंचमी और पराक्रम दिवस की सभी को बधाई देते हुए स्वामी विवेकानंद के ध्येय वाक्य को रेखांकित करते हुए विद्यार्थी धर्म और मानव सेवा की बात की। उन्होंने कहा कि जीवन में सफलता की ऊंचाई के लिए सुख और आलस का त्याग करना होता है। कड़ी तपस्या करना एक तरह से विद्यार्थी के लक्षण हैं। प्राचार्य ने सभी को नेताजी की तरह साहस और संकल्प को लेकर राष्ट्रभक्त बनने के लिए प्रेरित किया। इससे पहले दिल्ली विश्वविद्यालय के एनसीसी अधिकारी मेजर प्रो. संजय कुमार ने सभी का स्वागत हरिवंश राय बच्चन के मधुशाला गीत की पंक्तियों से किया। उन्होंने चेयरमैन को प्रेरणा और ऊर्जा का स्रोत बताया।

प्राचार्य ने चेयरमैन डॉ. जिगर इनामदार को मधुबनी पेंटिंग और दुशाला भेंट कर सम्मानित किया। चेयरमैन ने बारिश के बीच एनसीसी कैडेट्स के जज्बे को नमन किया और देश के लिए इसी तरह के जज्बे की वकालत की। समारोह में देश हित में नशा मुक्ति अभियान, मताधिकार और स्वच्छता अभियान के लिए संबंधित समितियों के अध्यक्षों ने प्रतिज्ञा दिलाई। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में मुख्य अतिथि के हाथों महाविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण हुआ। मुख्य अतिथि चेयरमैन डॉ. जिगर इनामदार और प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने ध्वजारोहण किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय की उपप्राचार्य प्रो. प्रेरणा दीवान, फंक्शन समिति की संयोजिका प्रो. मुक्ता दत्ता मजूमदार समेत बड़ी संख्या में शिक्षक, कर्मचारी, एनसीसी कैडेट्स और विद्यार्थियों ने अपनी भागीदारी दर्ज कराई। संचालन एनसीसी कैडेट उत्सव और तान्या ने किया।





प्राचार्य प्रो.राकेश कुमार गुप्ता व चेयरमैन डॉ.जिगर इनामदार ने रखे विचार।

जलवायु परिवर्तन की रिपोर्टिंग को गंभीरता से लेना होगा

माही शर्मा

नई दिल्ली। पत्रकार के तौर पर आज हर मुद्दे को पर्यावरण से जोड़ा जा सकता है। चाहे वह विश्व राजनीति का हो, आर्थिकी का हो या कोई अन्य विषय। आने वाले दस साल में पत्रकारिता में सबसे ज्यादा तेजी से बढ़ने वाली बीट पर्यावरण पत्रकारिता होगी। यह बात साधिका तिवारी ने रामलाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की परिषद 'मिरात' की ओर से 4 नवम्बर 2025 को आयोजित वक्ता सत्र के दौरान कही। कार्यक्रम का विषय 'जलवायु परिवर्तन की रिपोर्टिंग : जलवायु पत्रकारिता में लैंगिक दृष्टिकोण की आवश्यकता एवं कथा निर्माण' था।

मुख्य वक्ता के रूप में डीडब्लू न्यूज की एंकर साधिका तिवारी ने विद्यार्थियों को जलवायु परिवर्तन के वैज्ञानिक, सामाजिक और पत्रकारीय पहलुओं को विस्तार से बताया। उन्होंने समझाया कि कैसे बढ़ते तापमान, ग्लेशियरों के पिघलने, असामान्य वर्षा और प्रदूषण जैसी समस्याएं पृथ्वी के पारिस्थितिक संतुलन को प्रभावित कर रही हैं। मीडिया को केवल आपदा या संकट के समय ही नहीं, बल्कि लगातार जलवायु मुद्दों पर रिपोर्टिंग करनी चाहिए ताकि समाज में जागरूकता बनी रहे। उन्होंने बताया कि किस तरह जलवायु परिवर्तन कृषि क्षेत्र को प्रभावित करता है। जलवायु परिवर्तन के कारण ही किसानों की विभिन्न फसलें बर्बाद हो रही हैं। पत्रकारिता लैंगिक दृष्टिकोण की आवश्यकता पर अपने विचार रखते हुए उन्होंने तमाम समस्याओं और चुनौतियां पर प्रकाश डाला। इससे पहले हिंदी पत्रकारिता के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने मुख्य वक्ता का स्वागत करते हुए कहा–पर्यावरण में बदलाव आकस्मिक घटनाओं से नहीं बल्कि एक पूरी चेन है, जो बाद में जाकर एक बड़ी घटना बनती है। इन्हीं बिन्दुओं को जागरुक करने का काम पत्रकारिता का है। इस मौके पर शिक्षक डॉ. सीमा भारती, डॉ. देवेन्द्रनाथ तिवारी, डॉ. निशा सिंह, डॉ. श्वेता आर्या, डॉ अटल तिवारी, डॉ. विशाल शर्मा और रेडियो तरंग की फरजीन सुलतान सहित बड़ी संख्या में विभाग के विद्यार्थी मौजूद रहे।



हिंदी पत्रकारिता की ओर से आयोजित जलवायु परिवर्तन पर विशेष व्याख्यान में सिखाए गए रिपोर्टिंग के गुर।

आरएलएसी में लगा ब्लड डोनेशन कैंप

समर्थ

नई दिल्ली। इंडिया रेड क्रॉस समिति के सहयोग से रामलाल आनंद महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) ने 17 नवंबर 2025 को ब्लड डोनेशन कैंप आयोजित किया। कैंप में इंडिया रेडक्रॉस समिति के डॉ. जुबेर अहमद, डॉ. बेना, डॉ. अरोना, डॉ. मनोज, डॉ. रमेश, डॉ. अरुण कुमार, डॉ. शेर सिंह और डॉ. ऋषि शामिल रहे। रक्तदान शिविर में 28 विद्यार्थियों ने रक्त दान किया। रक्त दान के बाद विद्यार्थियों को फ्रूट जूस दिया गया। इस दौरान कार्यक्रम अधिकारी डॉ. अनुराग शर्मा, राष्ट्रीय सेवा योजना समिति के अध्यक्ष अर्थव गंभीर सहित महाविद्यालय के अन्य विद्यार्थी उपस्थित रहे।

आंगन सजाने की परंपरा से निकली मधुबनी पेंटिंग

भारत की लोक कलाएं केवल सौंदर्य की अभिव्यक्ति नहीं हैं। वह समाज की आस्था, परंपरा और सांस्कृतिक स्मृति की जीवंत धरोहर हैं। बिहार के मिथिला क्षेत्र की मधुबनी पेंटिंग ऐसी ही एक कला है, जिसमें प्रकृति, लोक जीवन, देवी–देवता और मानवीय भावनाओं का अद्भुत संगम दिखाई देता है। आज जब आधुनिकता के प्रभाव से पारंपरिक कलाएं चुनौती का सामना कर रही हैं, तब मधुबनी कला का संरक्षण एक तरह से सांस्कृतिक दायित्व बनता है। डॉ. रूपलेखा चौहान की पुस्तक 'राम विराजे रंगों में' इस संदर्भ में विशेष महत्व रखती है, जो बताती है कि कैसे लोकचित्रों में राम और भारतीय आस्था रंगों के माध्यम से जीवंत हो उठती है।



भारती

मधुबनी पेंटिंग की विशेषता इसकी प्रतीकात्मकता और रंगों की भाषा है। प्राकृतिक रंगों, ज्यामितीय आकृतियों और सूक्ष्म रेखांकन के माध्यम से कलाकार अपनी आस्था और भावनाओं को अभिव्यक्त करता है। भारतीय कला इतिहास के अध्ययन से स्पष्ट होती है कि मधुबनी पेंटिंग मूलतः महिलाओं की परंपरा रही है, जो दीवारों और आंगन को सजाने की लोक परंपरा से विकसित हुई। मधुबनी पेंटिंग पर किए गए अध्ययन में बताया गया है कि यह कला सौंदर्य के साथ सामाजिक और सांस्कृतिक संवाद का माध्यम है। इसी तरह आज मधुबनी पेंटिंग वैश्विक पहचान प्राप्त कर चुकी है। कागज, कपड़े और कैनवास पर बनने वाले चित्र कलाकारों को आजीविका प्रदान करने के साथ भारतीय लोकसंस्कृति को विश्व मंच तक पहुंचा रहे हैं। डॉ. रूपलेखा चौहान बताते हैं कि जब राम लोक चित्रों के रंगों में उतरते हैं तो वह धार्मिक प्रतीक होने के साथ संस्कृति और पहचान के वाहक बन जाते हैं। इन रंगों की परंपरा को सहेजा गया तो यह केवल एक कला नहीं बल्कि हमारी जड़ों से जुड़े रहने का माध्यम बनी रहेगी। इसी आशा के साथ फरवरी 2026 का 'कैम्पस कनेक्ट' आपके सामने पेश है।

भालचंद्र जोशी को कथाक्रम सम्मान

जोशी के कथा साहित्य में दिखाई देता है प्रकृति, जंगल, नदी और जीवन संघर्ष

आस्था त्रिपाठी

नई दिल्ली। हिंदी कथा साहित्य में आदिवासी समाज के जीवन, संवेदना और संघर्ष को केंद्र में लाने वाले वरिष्ठ कथाकार भालचंद्र जोशी को 2025 का प्रतिष्ठित आनन्द सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान प्रदान किया गया। हिंदी की त्रैमासिक पत्रिका 'कथाक्रम' की ओर से 7 दिसंबर 2025 को लखनऊ के कैफी आजमी सभागार में हुए 33वें सालाना समारोह में यह सम्मान प्रदान किया गया। सम्मान के साथ प्रशस्ति पत्र और 21 हजार रुपए की राशि भी दी गई। कथाक्रम सम्मान हिंदी कहानी लेखन में उत्कृष्ट योगदान देने वाले रचनाकारों को दिया जाता है।

मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्र खरगोन में जन्मे भालचंद्र जोशी ने जीवन का बड़ा हिस्सा आदिवासी समाज के बीच बिताया। पेशे से इंजीनियर जोशी ने आठवें दशक में कहानी लेखन प्रारम्भ किया। धीरे–धीरे हिंदी कथा साहित्य में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। उन्होंने आदिवासी जीवन को विषय नहीं अनुभव के रूप में लिखा। आदिवासी समाज की जीवन पद्धति, लोकविश्वास, श्रम, प्रकृति से संबंध, विस्थापन, शोषण और सांस्कृतिक संघर्षों को संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया। जोशी की कहानियां पाठक को कथा सुनाने के साथ समाज के मूलभूत प्रश्नों, विकास बनाम अस्तित्व, आधुनिकता बनाम परंपरा और सत्ता बनाम हाशिया को सामने लाती हैं। भालचंद्र जोशी ने निमाड़ अंचल की लोककथाओं और कलाओं पर अध्ययन किया है। आदिवासी लोक स्मृति में सुरक्षित कथाओं को साहित्यिक संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाएं इस बात की गवाही देती हैं कि लोककथाएं अतीत की वस्तु नहीं हैं। वह वर्तमान समाज की चेतना, भय, आशा और सामूहिक स्मृति की जीवित धारा होती हैं। उनकी कथाओं में प्रकृति, जंगल, नदी, आस्था, सामुदायिक संबंध और जीवन संघर्ष दिखाई देते हैं।



भालचंद्र जोशी के अब तक नौ कहानी संग्रह और दो उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। इस पूरे कथा साहित्य में संघर्षशील मनुष्य की जिजीविषा दिखाई देती है। इसी कारण उनकी कहानियां साहित्यिक विमर्श में सामाजिक चेतना और संवेदनात्मक यथार्थवाद का उदाहरण मानी जाती हैं।

भालचंद्र जोशी को इससे पहले भी कई सम्मान मिल चुके हैं। इनमें मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन का वागीश्वरी पुरस्कार, पाखी का शब्द साधक लेखक सम्मान, स्पंदन कृति सम्मान, शैलेश मटियानी कथा पुरस्कार शामिल हैं।

कथाक्रम सम्मान समिति–संयोजक शैलेन्द्र सागर, वरिष्ठ कथाकार शिवमूर्ति, रंगकर्मी राकेश और लेखिका रजनी गुप्त–ने सर्वसम्मति से भालचंद्र जोशी को 2025 का सम्मान प्रदान किया। समिति ने अपने वक्तव्य में कहा कि जोशी की कहानियों ने पाठकों को केवल साहित्यिक अनुभव नहीं दिया, बल्कि उन्हें समाज के मूल प्रश्नों के प्रति संवेदनशील बनाया। उन्होंने आदिवासी जीवन को हिंदी साहित्य में सम्मानजनक स्थान दिलाया।

भालचंद्र जोशी की कथाओं में तीन प्रमुख आयाम दिखाई देते हैं। हाशिए के समाज की आवाज, प्रकृति और मनुष्य का गहरा संबंध और सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक पहचान का प्रश्न उनका लेखन पाठक को भावुक करने के बजाय सोचने के लिए बाध्य करता है। यही उनकी स्थायी साहित्यिक शक्ति मानी जाती है।

पर्यावरण की रक्षा करते हुए करना होगा टिकाऊ उत्पादन

सर, जलवायु परिवर्तन क्या है?

जलवायु परिवर्तन की जब बात करते हैं तो इसका मतलब किसी एक मौसम का बदलना नहीं होता है बल्कि यह एक वैश्विक घटना है। इसका मतलब है धरती की जलवायु में लंबे समय तक आने वाला बदलाव जो पृथ्वी के तापमान, वर्षा, हवा के पैटर्न और मौसम की अन्य स्थितियों में लंबे समय तक धीरे–धीरे, लेकिन स्थायी बदलाव होना जलवायु परिवर्तन कहलाता है। यह कोई एक दो दिन का बदलाव नहीं बल्कि कई वर्षों और दशकों में होने वाली बड़ी परिवर्तन प्रक्रिया है। इसको हम सीधे शब्दों में समझें तो पहले एक मौसम का एक अंदाजा होता था कि कब बारिश होगी, कब ठंड पड़ेगी। वह पैटर्न अब बदलता जा रहा है। तापमान लगातार बढ़ रहा है। इनके प्रमुख कारणों पर गौर करें तो जंगलों की कटाई, जीवाश्म ईंधन का अधिक उपयोग जैसे कि कोयला, पेट्रोल, डीजल और औद्योगिक प्रदूषण जो वातावरण में ग्रीन हॉउस की मात्रा बढ़ाते हैं। यह परिवर्तन खास तौर पर खेती, पशुपालन और जल संसाधनों पर गंभीर असर डाल रहा है।

किसानों के लिए जलवायु परिवर्तन सबसे बड़ा जोखिम क्यों है?

खेती पूरी तरह से मौसम पर ही निर्भर करती है। समय पर बारिश होना, सही तापमान, ठंड और गर्मी की अवधि। यह सब कुछ फसल की जरूरत के हिसाब से होना चाहिए। तब कहीं जाकर किसानों को अच्छा उत्पादन मिलता है। जलवायु परिवर्तन के कारण बरसात कभी कम कभी ज्यादा और कभी बिलकुल गलत समय पर हो जाती है, जिससे बुवाई, फूल आने और दाना बढ़ने के चरण पर बहुत बुरा असर पड़ता है। तापमान बढ़ने से फसलों की जीवन अवधि भी कम हो जाती है, जिससे दाना ठीक से नहीं भर पाता और उपज भी घट जाती है। साथ ही नए कीट रोग, तना छेदक, पत्तों की अधिक बीमारियां, यह सब बढ़ जाती हैं, जिनको संभालना एक छोटे किसान के लिए कठिन हो जाता हैं। परिणाम यह होता है कि लागत बढ़ती है। उत्पादन घटता है और किसान की आमदनी पर सीधा असर पड़ता है।

इन सब जोखिमों से निपटने के क्या मुख्य उपाय होते हैं?

हम देखते हैं कि कृषि क्षेत्र जलवायु परिवर्तन से गंभीर रूप से प्रभावित हो रहा है, लेकिन इसके कई उपाय भी हैं। उनके माध्यम से इसके प्रभाव को कम किया जा सकता है। खेती को अधिक लचीला बनाया जा सकता है। इसके प्रमुख उपायों में हम देख सकते हैं कि कुछ जल संरक्षण तकनीकें हैं। इसमें माइक्रो इरिगेशन हो गया, जिसके अंदर आता है ड्रिप और स्प्रिंक्लर सिंचाई आती है। वर्षा जल संचयन हैं और खेत में नमी बनाए रखने की अनेक विधियां हैं और हम बात कर सकते हैं जलवायु, लचीली फसल की जिसे हम क्लाइमेट रेजीलेंट वेरायटी के नाम से जानते हैं। यह सूखा सहनशील होती है। ताप सहनशील होती है और रोग प्रतिरोधी क्षमता भी इसमें काफी होती है। एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन जिसे अंग्रेजी में हम इंटिग्रेटेड न्यूट्रेंड मैनेजमेंट के नाम से जानते हैं, इसमें जैविक खाद, हरी खाद और उर्वरकों का संतुलित उपयोग होता है। इसमें जैविक उर्वरक का उपयोग कम हो जाता है। इसके बाद एकीकृत कीट प्रबंधन के बारे में हम बात कर सकते हैं जिसे हम अंग्रेजी में इंटिग्रेटेड पेस्ट मैनेजमेंट के नाम से जानते हैं।



भारतीय कृषि अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक *डॉ. शशांक पटेल* पिछले दिनों राम लाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम के मेहमान थे। इस दौरान उनसे हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार की तृतीय वर्ष की छात्रा *दिव्या* ने विस्तार से बात की। इसमें खेती-किसानी से जुड़े अनेक पहलुओं पर सवाल किए गए, जिसके उन्होंने बेबाकी से जवाब दिए। उस बातचीत के संपादित अंश 'कैम्पस कनेक्ट' के पाठकों के लिए यहां पेश हैं...

तरंग TARANG 90.0 FM

इसमें रासायनिक दवाइयों के स्थान पर जैविक और सांस्कृतिक तरीकों का प्रयोग करना होता है। इसके बाद इसको कम करने के लिए फसल चक्र और मिश्रित कृषि भी एक अच्छा उपाय है। फिर उसके बाद मृदा संरक्षण तकनीकें हैं जो मिट्टी के कटाव को नियंत्रित करती हैं। अवशेष का प्रबंधन करती हैं और मल्चिंग आदि में मदद करती हैं। इन्हीं प्रमुख उपायों में से सबसे प्रभावी उपायों में से एक है संरक्षण कृषि, जो सीधे जलवायु परिवर्तन के अनुकूलन और इसके प्रभाव में कमी दोनों में योगदान देती है।

संरक्षण कृषि क्या होती है?

संरक्षण कृषि की यदि हम बात करें तो यह एक ऐसी वैज्ञानिक पद्धति है जिसका उद्देश्य मिट्टी, पानी और पर्यावरण की रक्षा करते हुए टिकाऊ उत्पादन करना है। संरक्षण कृषि मुख्यतः तीन सिद्धांतों पर काम करती है। पहला है कम से कम जुताई या शून्य जुताई जिसे हम मिनिमम या जीरो भी बोलते हैं यानी मिट्टी को ज्यादा अलट पलट नहीं करना है ताकि उसकी संरचना और जैविक जीवन सुरक्षित रहे। दूसरा है फसल अवशेषों का संरक्षण जिसे हम रेसिड्यू बोलते हैं। इसका मतलब है कटाई के बाद फसल की डेंठल और पुआल, जो जलाने के बजाय जमीन की सतह पर फैला कर छोड़ देना चाहिए ताकि वह अच्छी तरह काम करे और तीसरा महत्वपूर्ण सिद्धांत है फसल चक्र और विविधता। इसे हम क्रॉप रोटेशन एंड डिवरिसिफिकेशन बोलते हैं। इसका मतलब है एक ही फसल को बार बार न बोकर अलग अलग फसलों को क्रम से लेना। जैसे अनाज के बाद दलहन या तिलहन। इन सिद्धांतों से मिट्टी की सेहत सुधरती है। लागत घटती है और जलवायु परिवर्तन के प्रति फसलें अधिक सहनशील भी बनती हैं।

संरक्षण कृषि जलवायु परिवर्तन से लड़ती कैसे है?

संरक्षण कृषि जलवायु परिवर्तन से लड़ने में लाभकारी है। क्योंकि संरक्षण कृषि से मिट्टी में जैविक कार्बन जिसे हम सॉइल ऑर्गेनिक कार्बन बोलते हैं, वहां बढ़ता है जो वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड को पकड़कर मिट्टी में सिंचित करने में मदद करता है। इसके साथ ही जुताई और अवशेषों के रखरखाव से मिट्टी कम सूखती है। नमी ज्यादा देर तक बनी रहती है, जिससे सूखे के समय भी फसल को मदद मिलती है। फसल अवशेषों की परत मिट्टी को सीधे धूप और तेज वर्षा से भी बचाती है, जिससे मिट्टी का कटाव रुकता है। इसके अलावा कम जुताई से डीजल की खपत और ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन भी घटता है। कुल मिलाकर हम देखें तो संरक्षण कृषि जलवायु परिवर्तन को कम करने और उसके प्रभावों से निपटने दोनों में सहायक है।

शून्य जुताई के क्या लाभ हैं?

शून्य जुताई का मतलब है खेत को दोबारा न जोतकर सीधे बीज बोना। इसमें खेत की पारंपरिक गहरी जुताई नहीं की जाती। विशेष मशीनों की मदद से सीधे बुवाई की जाती है। ऐसा करने से समय की बचत होती है। खासकर धान और गेहूं की फसल में। देर से धान कटने पर भी समय से गेहूं बोया जा सकता है। डीजल और मजदूरी की लागत कम हो जाती है। मिट्टी में नमी का संरक्षण बेहतर होता है। सिंचाई की जरूरत भी कम पड़ती है। मिट्टी की संरचना और जीव जंतु जैसे केंचुए सुरक्षित रहते हैं, जो मिट्टी को उपजाऊ बनाने में प्रमुख कारक हैं। शून्य जुताई से मिट्टी अधिक स्वस्थ और उत्पादक बनती है।

फसल अवशेषों को जलाने के बजाय खेत में रखने के क्या लाभ होते हैं?

फसल अवशेषों को जलाने के बजाय खेत में रखने के अधिक लाभ हैं। अवशेष को जलाना आसान लगता है, लेकिन इससे मिट्टी, पर्यावरण और स्वास्थ्य को बड़ा नुकसान होता हैं। फसल अवशेष जैसे पुआल, ठूंठ, पत्तियां आदि के जलने से वातावरण में धुंआ और प्रदूषण फैलता है। मिट्टी के जैविक पदार्थ नष्ट हो जाते हैं। इन्हें खेत में सतह पर बिछाकर रखें तो यह मल्च की तरह काम करते हैं। सतह पर एक सुरक्षा परत बना देते हैं। यह परत मिट्टी को धूप से सीधे गर्म नहीं होने देती। नमी का वाष्पीकरण कम होता है। बारिश के समय भी पानी का बहाव और कटाव घटता है। अवशेषों के सड़ने गलने से मिट्टी को नाइट्रोजन, फा. स्फोरस, पोटास सहित कई सूक्ष्म पोषक तत्व मिलते हैं।

वायु और जल प्रदूषण को रोकना जरूरी

समर्थ/शिवम यादव

नई दिल्ली। अर्थ साइंस वीक के तहत भूविज्ञान विभाग की टेरेक्स सोसायटी ने रामलाल आनंद महाविद्यालय में 16 अक्टूबर 2025 को अर्थ साइंस डे का आयोजन किया। इसका विषय रहा–'भविष्य के लिए ऊर्जा संसाधन।' इस अवसर पर विशेषज्ञ डॉ. नवीन राज ने ऊर्जा सुरक्षा और पर्यावरणीय स्थिरता विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने ऊर्जा त्रिलम्मा को ऊर्जा नीति के तीन मुख्य आयामों को संतुलित करने वाली रूपरेखा बताया, जिसमें ऊर्जा सुरक्षा, ऊर्जा इक्विटी और पर्यावरणीय स्थिरता शामिल है।

वैज्ञानिक डॉ. एके द्विवेदी ने भविष्य के ऊर्जा संसाधन और भारत में परमाणु ऊर्जा की भूमिका पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि प्रदूषण को कम करने के लिए कार्बन की खपत पर काम करना चाहिए। इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों का उपयोग करना चाहिए। साथ ही वायु और जल प्रदूषण को बढ़ाने वाले कार्यों में रोक लगानी चाहिए। इस दौरान सतत ऊर्जा संसाधनों पर आधारित एक डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई। उसमें वैश्विक ऊर्जा संकट और उसके समाधान पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। इसके साथ ही जियोमोजी पिक्शनरी नाम से एक क्विज हुई, जिसमें विद्यार्थियों की रचनात्मकता देखने को मिली। इस दौरान विभाग के शिक्षक डॉ. प्रभाष पांडे, डॉ. सरबरी नाग, डॉ. रवीश लाल, सुश्री लिमिवोन जिमिक, सुश्री पूजा यादव, टेरेक्स के संयोजक अरुण कुमार और डॉ. श्वेता राय मौजूद रहीं।



अर्थ साइंस वीक पर आयोजित सत्र में वक्ताओं ने रखे विचार।



रामलाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार की ओर से आयोजित फोटोग्राफी पर कार्यशाला में मौजूद प्रतिभागी।

व्यावसायिक नजरिए से क्लिक करें फोटो

आयुष प्रजापति

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने 11 नवंबर 2025 को फोटोग्राफी की बारीकियों पर एक कार्यशाला रखी। इसमें जाने माने फोटोग्राफर एवं प्रशिक्षक वीरेंद्र अधिकारी ने विद्यार्थियों को कैमरा से रचनात्मकता तक की यात्रा के बारे में बताया। प्रशिक्षक वीरेंद्र अधिकारी आईआईटी, एनआईटी, आईआईएम, आईआईएमसी जैसे अनेक संस्थानों में व्यावहारिक गतिविधियों से फोटोग्राफी को सिखाने का काम करते रहे हैं।

कार्यशाला में वीरेंद्र अधिकारी ने फोटोग्राफी को शौक न मानकर व्यावसायिक बताते हुए कहा कि फोटोग्राफी का उद्देश्य दस्तावेजीकरण का है। उन्होंने विद्यार्थियों को कैमरा ठीक से पकड़ने से लेकर फोटो कैप्चर करने तक के तरीके सिखाए। इस क्रम में फोटोग्राफी की मूलभूत अवधारणा और शॉट संयोजन नियम को व्यावहारिक गतिविधियों से समझाया। इसमें रूल ऑफ थर्ड, शेप, रिफ्लेक्शन और फोटो एंगल शामिल रहे। उन्होंने सिखाया कि कैसे सब्जेक्ट, लाइट और प्लेसमेंट तीनों को मिलाकर अच्छी फोटो खींची जाती है।

विद्यार्थियों ने प्रैक्टिकल के उद्देश्य से महाविद्यालय के अलग अलग स्पॉट पर जाकर फोटो खींची। वीरेंद्र अधिकारी ने इन फोटो को देखा। हर एक फोटो की कमी और अच्छाई पर बात की। फोटो को और बेहतर कैसे कर सकते हैं, इसके लिए कई तरीके बताए। फोटो की बुनियादी और मैनिपुलेशन दोनों प्रकार की एडिटिंग पर प्रकाश डाला। फोटो एडिटिंग के लिए सॉफ्टवेयर पर काम करना सिखाया। इससे पहले वीरेंद्र अधिकारी ने विद्यार्थियों से फोटोग्राफी और कैमरा से जुड़े कुछ सवाल किए। इन सवालों के जवाब में वीरेंद्र ने फोटोग्राफी से जुड़े हर एक पहलू को रेखांकित किया।

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने कहा कि एक तरह से फोटोग्राफी और फोटो एक विचार लेकर चलता है। फोटोग्राफी के लिए अपनी आंख तैयार रखनी होती है। उन्होंने छात्राओं को फोटोग्राफी न करने पर चिंता जताई। कहा कि लड़कियां भी कैमरा सीखें। उसे चलाना सीखें। लड़के केवल फोटोग्राफी करते हैं, इसे बदलने की जरूरत है। कार्यशाला के संयोजक डॉ. विशाल शर्मा ने कहा कि फोटोग्राफी को केवल अपना शौक न बनाएं। इसे अपने करियर में लाएं। डॉ. अटल तिवारी ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि मौजूदा समय शब्दों की पत्रकारिता के साथ फोटो की पत्रकारिता का है। विद्यार्थी समाचार सामग्री फोटो के नजरिए से सोचें। आस्था त्रिपाठी ने मंच संचालन किया। इस तरह फोटोग्राफी की यह कार्यशाला दो सत्रों में चली। आयोजन की रूपरेखा पत्रकारिता की समिति 'मिरात' परिषद ने रखी। इस मौके पर पत्रकारिता विभाग की डॉ. सीमा भारती, डॉ. देवेन्द्र नाथ तिवारी, डॉ. निशा सिंह, फरजीन सुल्तान समेत अनेक विभागों के विद्यार्थी मौजूद रहे और कार्यक्रम को सफल बनाया।

आईपीएल ऑक्शन में खिलाड़ियों की बोली

दीपक कुमार/भूमिका शार्दुल

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की वाणिज्य विभाग की समिति काचिंग ने 4 नवंबर 2025 को कॉम–आइक्यू 25 नामक आयोजन करवाया। अंतरमहाविद्यालय कार्यक्रम में दो प्रतियोगिता केस्ट्रीट और आ. ईपीएल ऑक्शन हुईं, जिसमें विभिन्न महाविद्यालय से आए प्रतिभागियों ने भाग लिया। केस्ट्रीट प्रतियोगिता में शेयर की कीमत की जानकारी के बाद उन्हें शेयरों की खरीद–बिक्री और निवेश करना था। आईपीएल ऑक्शन में प्रतिभागियों की टीम को फ्रेंचाइजी के रूप में विभाजित कर एक निश्चित बजट दिया गया। उन्हें खिलाड़ियों के ऊपर बोली लगानी थी। इस दौरान समिति संयोजक डॉ. सुप्रिया कामना, शिक्षक राजेन्द्र सिंह, समिति सदस्य व विभिन्न कॉलेज से आए प्रतिभागी मौजूद रहे।

पोस्टर के जरिए नशा मुक्ति का संदेश

नई दिल्ली। महाविद्यालय की एनएसएस, एनसीसी और गांधी स्टडी सर्किल ने पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया। गत 12 नवंबर 2025 को हुई इस प्रतियोगिता का विषय 'दी स्मोक दैट स्टोल हिज स्काई' रहा। इस मौके पर गांधी स्टडी सर्किल के संयोजक राजेन्द्र सिंह ने विद्यार्थियों को नशे से दूर रहने की सलाह दी। प्रतियोगिता में भाग ले रहे आकर्ष मौर्य, तन्वी वैभव और रेतूल मिश्रा ने क्रमशः पहला, दूसरा और तीसरा स्थान प्राप्त किया। इस मौके पर एनसीसी प्रभारी मेजर प्रो. संजय कुमार, एनएसएस संयोजक डॉ. अनुराग शर्मा, एनसीसी और गांधी स्टडी सर्किल के अनेक पदाधिकारी उपस्थित रहे।

फिल्म स्क्रीनिंग से पर्यावरण जागरुकता का दिया संदेश

अविनाश सिंह

नई दिल्ली। फिल्में सिर्फ मनोरंजन का ही साधन नहीं हैं बल्कि इसे पर्यावरण के प्रति जागरुकता को बढ़ाने के लिए औजार के रूप में भी काम में लिया जा सकता है। यह बात रामलाल आनंद महाविद्यालय के पर्यावरण क्लब वसुधा समिति की संयोजिका डॉ. दीप्ति गुप्ता ने कही। वसुधा समिति ने 7 नवंबर 2025 को अवतार फिल्म की स्क्रीनिंग का आयोजन किया।

अवतार फिल्म स्क्रीनिंग का उद्देश्य प्राकृतिक पृष्ठभूमि से जुड़ा रहा। फिल्म में पेंडोरा ग्रह दिखाई देता है जहां सभी जीव–जंतु, पेड़–पौधे और प्रकृति आपस में जुड़े हुए हैं। यह फिल्म सभी को सिखाती है कि पृथ्वी पर भी संतुलन बनाए रखना जरूरी है। साथ ही पर्यावरण के प्रति हमारी क्या भूमिका है। इसे भी गहराई से बताया। समिति संयोजिका डॉ. दीप्ति गुप्ता ने प्राकृतिक और उसके संरक्षण से जुड़े मुद्दों पर चिंता व्यक्त की और कहा कि प्रकृति को बचाए रखने का काम हर व्यक्ति का है। समिति के शिक्षक डॉ. वीरेंद्र बहादुर ने समिति के सदस्यों का हौसला अफजाई किया। इस मौके पर समिति के पदाधिकारी समेत बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

केस स्टडी प्रतियोगिता का किया आयोजन

सची यादव

नई दिल्ली। वैश्विक अर्थशास्त्र और भू–राजनीतिक गतिशीलता चुनौतियां और राष्ट्रीय विकास के प्रभाव विषय पर रामलाल आनंद महाविद्यालय में अर्थशास्त्र विभाग ने 13 अक्टूबर 2025 को केस स्टडी प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस प्रतियोगिता में दस टीमों ने भाग लिया।

प्रतिभागियों ने पीपीटी के जरिए अपने विचार केस स्टडी के रूप में प्रस्तुत किए। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान टीम व्हाईराट, टीम जोकर ने दूसरा और टीम इनसेप्टर्स ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। संयोजक डॉ मनोज कुमार और विभाग अध्यक्ष मेघा यादव इस दौरान मौजूद रहीं।

कविता प्रतियोगिता में प्रथम रहीं हंसराज की देवांशी

खुशबू

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की अंग्रेजी रचनात्मक लेखन समिति अभिव्यक्ति की ओर से आयोजित स्लैम कविता प्रतियोगिता में कई महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। 17 नवंबर 2025 को हुई प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका डॉ. रितु वत्स, डॉ. सोमा पटनायक, सुश्री मीनाक्षी ब्रह्म और सुश्री लिमिवोन जिमिक ने निभाई।

प्रतिभागियों को कविता लिखने के लिए 30 मिनट का समय दिया गया। लिखने के बाद सभी प्रतिभागियों ने मंच पर आकर अपनी प्रस्तुतियां दीं। कविता प्रतियोगिता में हंसराज महाविद्यालय की देवांशी जांगिड ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। दूसरे और तीसरे स्थान पर जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज की गौरी वहादेरा और मोतीलाल नेहरू महाविद्यालय की विस्मित विनय रहीं।

प्रतियोगिता में स्पेशल मेंशन दौलत राम कॉलेज की सृष्टि स्वयांश और आरएलएसी की अन्विता को दिया गया। सभी विजेताओं को डॉ. रितु वत्स ने प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। इस दौरान समिति संयोजिका सुश्री मीनाक्षी ब्रह्म, सह संयोजिका सुश्री लिमिवोन जिमिक सहित अन्य विद्यार्थी भी उपस्थित रहे।

वंदे मातरम के गायन से देशभक्ति की गूंज

दिव्या

नई दिल्ली। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के निर्देशानुसार दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद महाविद्यालय ने वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में एक समारोह का आयोजन किया। महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) इकाई और राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) के संयुक्त तत्वावधान में 7 नवंबर 2025 को प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता के निर्देशन में हुए आयोजन में शिक्षक, कर्मचारी और बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

सेमिनार रूम में हुए राष्ट्र भक्ति से ओतप्रोत समारोह की शुरुआत राष्ट्र गीत वंदे मातरम् के सामूहिक गायन से हुई, जिसका नेतृत्व एनएसएस के विद्यार्थियों ने किया। तत्पश्चात विद्यार्थियों ने देशभक्ति के नारों से मातृभूमि के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की। प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने कहा कि इस तरह के आयोजनों से देश के प्रति लोगों में लगाव बढ़ता है। अपने देश के लिए किए गए क्रांतिकारियों के योगदान के बारे में पता चलता है।

इस मौके पर हिंदी पत्रकारिता के संयोजक प्रो. राकेश कुमार, दिल्ली विश्वविद्यालय के एनसीसी प्रभारी मेजर प्रो. संजय कुमार, राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रभारी डॉ. अनुराग शर्मा, डॉ. कमल कुमार राउल, डॉ. अटल तिवारी, डॉ. विशाल शर्मा, प्रशासनिक अधिकारी चंचल बत्रा, लेखा अधिकारी संजय जैन सहित कई शिक्षक, कर्मचारी और बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।



राम लाल आनंद महाविद्यालय में वंदे मातरम के सामूहिक गायन में प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता और शिक्षक।

शिक्षा जागरूकता पर प्रतिभागियों के विचार

जया सिंह

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की इक्वल अपॉर्चुनिटी सेल ने 10 नवंबर 2025 को वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिता में अलग–अलग महाविद्यालय से आए लगभग 40 विद्यार्थियों ने भाग लिया। शिक्षा किस प्रकार जागरूकता लाती है जैसे अनेक तर्कों पर प्रतिभागियों ने अपने विचार रखे।

निर्णायक मंडली में हिंदी पत्रकारिता के शिक्षक डॉ. विशाल शर्मा, डॉ. सीमा भारती और सांख्यिकी विभाग के डॉ. कुलदीप सिंह चौहान थे। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान मिरांडा हाउस कॉलेज की स्नेहा, मोतीलाल नेहरू कॉलेज के राजशेखर और लेडी श्रीराम कॉलेज की नूर ने प्राप्त किया। सभी को पुरस्कृत किया गया।



रामलाल आनंद महाविद्यालय में इतिहास विभाग की समिति तवारीख ने शहीद ए आजम भगत सिंह फिल्म स्क्रीनिंग का आयोजन किया।

सुपर 30 में दिखा संघर्ष और समर्पण

खुशबू

नई दिल्ली। शिक्षा जीवन का आधार है। हमें प्रतिदिन कुछ नया सीखने का प्रयास करना चाहिए। यह बात रामलाल आनंद महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) इकाई की ओर से सुपर 30 फिल्म की स्क्रीनिंग के समय एनएसएस अधिकारी डॉ. अनुराग शर्मा ने कही। 25 सितम्बर 2025 को हुई स्क्रीनिंग में एनएसएस अध्यक्ष अथर्व गंभीर ने कहा कि फिल्म के माध्यम से विद्यार्थियों को यह प्रेरणा मिलती है कि कठिनाइयों के बावजूद लक्ष्य के प्रति समर्पित रहकर सफलता प्राप्त की जा सकती है। संचालन करते हुए कार्तिक यादव ने कहा कि फिल्म सुपर 30 प्रसिद्ध गणितज्ञ आनंद कुमार के जीवन, संघर्ष और समर्पण पर आधारित है।

फिल्म के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रेरणा मिलती है कि कठिनाइयों के बावजूद लक्ष्य के प्रति समर्पित रहकर सफलता प्राप्त की जा सकती है। अखिल शुक्ला ने बताया कि आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों को शिक्षा, संघर्ष और सामाजिक सरोकारों के महत्व से जोड़ना है। फिल्म विद्यार्थियों को सकारात्मक सोच, कड़ी मेहनत और जीवन में दृढ़ निश्चय की प्रेरणा देती है। स्क्रीनिंग के समय एनएसएस के सभी सदस्य एवं सभी विभागों के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

शहीद भगत सिंह की दिखाई विरासत

अमृत कुमार पांडेय

नई दिल्ली। भगत सिंह का जीवन हमें साहस, समर्पण और कर्तव्यनिष्ठा का संदेश देता है। युवा पीढ़ी को उनके आदर्शों से प्रेरणा लेनी चाहिए। यह बात राम लाल आनंद महाविद्यालय में तवारीख इतिहास समिति की ओर से 25 सितम्बर 2025 को आयोजित द लीजेंड ऑफ भगत सिंह फिल्म स्क्रीनिंग के अवसर पर प्रो. राजीव कुमार ने कही। भगत सिंह की प्रेरक गाथा पर आधारित यह फिल्म उनके संघर्ष को दिखाती है। विद्यार्थियों ने फिल्म से देशभक्ति और साहस का संदेश लिया। इसके साथ ही नवागत टीम व पदाधिकारियों का सम्मान समारोह हुआ। इस अवसर पर नई टीम के सदस्यों को पदक व बैज देकर जिम्मेदारियों का दायित्व सौंपा। जहां पुरानी टीम को स्नेहिल विदाई दी। साथ ही नई टीम का स्वागत किया गया।

ऑडिशन से नए सदस्यों की रचनात्मकता परखी

हर्षित यादव

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय की हिंदी रचनात्मकता लेखन समिति अभिव्यक्ति ने 29 सितंबर 2025 को नए सदस्यों के चयन के लिए ऑडिशन किया। चयन प्रक्रिया को दो चरणों में बांटा गया। पहले चरण में विद्यार्थियों को चार विषय दिए गए, जिसमें विद्यार्थियों को एक विषय का चुनाव कर किसी भी विधा में लिखना था।

पहला विषय कॉलेज इलेक्शन से बिगड़ता माहौल या बनता भविष्य, दूसरा विषय दिल्ली मेट्रो या डीटीसी बस का सफर, तीसरा विषय पहले क्या थे और अब क्या हैं और चौथा विषय वास्तविकता से परे रहा। दूसरे चरण में विद्यार्थियों का साक्षात्कार लिया गया। साक्षात्कार में निर्णायक की भूमिका समिति के अध्यक्ष आयुष प्रजापति, उपाध्यक्ष खुशी शाक्या और सचिव भारती बल ने निभाई। इस दौरान समिति के संयोजक डॉ. सुरेंद्र सिंह, सह–संयोजक डॉ. राजेश गौतम सहित विभिन्न विभागों के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

नए विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

दीपिका/नई दिल्ली। महाविद्यालय में 3 सितंबर 2025 को अंदाज समिति का ऑडिशन हुआ। ऑडिशन को अलग अलग भाग में विभाजित किया गया। विद्यार्थियों को पुराने कार्यक्रमों पर 40 सेकेंड बोलना था। पहले विद्यार्थियों ने एंकरिंग का ऑडिशन दिया। दूसरे राउंड में शिक्षक दिवस को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों ने शिक्षकों पर कंटेंट प्रस्तुत किया। जज की भूमिका में वैष्णवी और अमृत रहे। तीसरे राउंड में पोस्टर मेकिंग और पोस्टर डिजाइन प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने भाग लिया। इसमें समिति के सोशल मीडिया टीम के आकाश और समिति की सचिव अनुष्का झा ने निर्णायक की भूमिका निभाई। विद्यार्थियों ने जो पोस्टर बनाए थे। उनके बारे में बताना भी था कि इसका क्या मतलब है और यह हमें क्या बताना चाहते हैं। ऑडिशन के दौरान समिति संयोजिका प्रो.मुक्ता दत्ता मजूमदार और समिति के सदस्य जज के रूप में उपस्थित रहे।

इंजीनियरिंग में गणित की थ्योरी

श्रेया सिंह/नई दिल्ली। फिक्स्ड प्वाइंट थ्योरी और ब्रोवर फिक्स्ड प्वाइंट थ्योरी का प्रयोग इंजीनियरिंग में होता है। यह बात एमयू के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. जावेद अली ने रामलाल आनंद महाविद्यालय में 25 सितम्बर 2025 को फिक्स्ड प्वाइंट थ्योरी के अनुप्रयोग में कही। गणित विभाग की ओर से आयोजित कार्यशाला में डॉ. जावेद अली ने बताया कि गणित की थ्योरी का प्रयोग किस तरह इंजीनियरिंग, इकोनॉमिक्स, कंप्यूटर साइंस और फिजिक्स में किया जाता है। यह थ्योरी कई शाखाओं जैसे विश्लेषण, टोपीलॉजी और डायनामिकल सिस्टम्स में मूलभूत भूमिका निभाती है। कार्यशाला के अंत में प्रश्नोत्तर का आयोजन किया, जिसमें विद्यार्थियों ने विषय से जुड़े प्रश्न पूछे। सभी प्रश्नों का उत्तर डॉ. जावेद अली ने दिया। इस दौरान शिक्षक डॉ. बसंत कुमार, डॉ. पवन कुमार सहित अन्य विद्यार्थी मौजूद उपस्थित रहे।

नुक्कड नाटक में बताया, कैसे करें चुनौतियों का सामना

शिवानी

- विद्यार्थियों ने दिव्यांग महिला और बच्चे की पीड़ा को बेहतर तरीके से दिखाया
- नुक्कड़ नाटक में भेदभाव और संघर्ष को कलाकारों ने किया प्रस्तुत

नई दिल्ली। विशेष लोगों की परेशानियों तथा उनके साथ होने वाले भेदभाव को हसरतें की प्रस्तुति ने विद्यार्थियों के सामने उजागर किया। रामलाल आनंद महाविद्यालय की समिति सुगम ने हसरतें समिति के सहयोग से महाविद्यालय के परिसर में 30 सितंबर 2025 को आयोजन किया। इस दौरान हसरतें के सदस्यों ने नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया, जिसे लोगों ने सराहा।

नाटक में एक दिव्यांग महिला पर किए गए अत्याचार के साथ शारीरिक कमजोरी के कारण एक बच्चे के पढ़ने की आशा को समाज ने किस प्रकार खत्म किया, यह दिखाया गया। सुगम समिति के सदस्य शेखर सुमन ने कम दिखने की समस्या को भी बताया इस कारण वह किन चुनौतियों का सामना करते हैं, यह भी बताया। प्रस्तुति के बीच सुधा चन्द्रन, अरुणिमा सिन्हा तथा नवदीप सिंह का नाम लिया गया, जिन्होंने अपनी शारीरिक कमियों के बावजूद कभी हार नही मानी। साथ ही अपने देश का नाम रोशन किया। इस दौरान सुगम समिति की संयोजिका डॉ. सोमा पटनायक, सह संयोजक कप्तान सहित अनेक विद्यार्थी उपस्थित रहे।

लोगो मेकिंग में दिखा बच्चों का हुनर

दीपिका

नई दिल्ली। विद्यार्थियों की रचनात्मकता सामने आए। वह अपनी कला का प्रदर्शन अच्छे तरीके से करें। यह बात प्रो. वंदना गंडोत्रा ने रामलाल आनंद महाविद्यालय के कंप्यूटर साइंस विभाग इ पीपल ऑर्गेनाइजेशन और स्किल डेवलपमेंट सेंटर फॉर इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी के सहयोग से 26 सितम्बर 2025 को आयोजित लोगो निर्माण प्रतियोगिता में कही।

प्रतिभागियों ने स्किल डेवलपमेंट विषय को केन्द्र में रखकर लोगो बनाए। इस प्रतियोगिता में विजेता शुभम शर्मा को घोषित किया गया। उन्हें एक हजार रुपए की राशि प्रदान की गई। प्रतियोगिता के दौरान डॉ. अरुण कुमार गौतम सहित कई शिक्षक एवं प्रतिभागी उपस्थित रहे।



कैम्पस कनेक्ट का 27वां अंक विमोचित

अनुराग

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय के मासिक ईन्यूज लेटर 'कैम्पस कनेक्ट' के 27वें अंक का विमोचन 6 फरवरी 2026 को किया गया। विमोचन में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार के संयोजक प्रो. राकेश कुमार, संपादक आशीष कुमार राणा और उपसंपादक भारती मौजूद रहीं।

'कैम्पस कनेक्ट' की शुरुआत सितंबर 2023 में की गई थी। यह अंक चौथे वर्ष का पहला जनवरी 2026 का अंक है। प्राचार्य ने हिंदी पत्रकारिता के विद्यार्थियों को बधाई देते हुए इस सफर को जारी रखने की प्रेरणा दी। 'कैम्पस कनेक्ट' के भविष्य के अंकों पर भी बातचीत की। प्राचार्य ने संपादक से बात करते हुए क्वार्क सॉफ्टवेयर से जुड़े सवाल किए और संपादन के अनुभव के बारे में जाना।

अंक के पहले पृष्ठ की मुख्य खबर महाविद्यालय में हुए वंदे मातरम के 150 वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजन पर केन्द्रित है।

अंक की मुख्य थीम फोटोग्राफी रही। संपादक ने अपनी संपादकीय टिप्पणी में फोटोग्राफी के करियर पर बात की। शेयर बाजार से जुड़ी खास बातचीत के साथ पिछले महीने में महाविद्यालय में आयोजित सभी कार्यकर्मों की जानकारी अंक में समाहित है।

तब तक प्रयास करें ,जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो

शिवम कुमार

नई दिल्ली। समूह में काम करने से कम्युनिकेशन और लीडरशिप स्किल बढ़ती है। नेशनल सर्विस स्कीम (एनएसएस) हमें सफाई से कम्युनिकेशन तक ले जाती है। यह बात रामलाल आनंद महाविद्यालय में 24 सितम्बर 2025 को एनएसएस के स्पीकर सेशन में फर्स्ट एंड फाउंडिंग वॉलंटियर से सम्मानित डॉ. कृष्ण कुमार गुप्ता ने कही।

भारत महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी वर्ष मना रहा था। गांधीजी युवाओं को समाज सेवा और गांवों के विकास में सक्रिय भागीदारी के संदेश देते थे। इसी के उपलक्ष्य में 24 सितम्बर 1969 को एनएसएस की आधिकारिक शुरुआत की गई थी। एनएसएस स्वामी विवेकानंद और गांधीजी के विचारों और ज्ञान पर आधारित है। वीडियो के माध्यम से डॉ. कृष्ण कुमार गुप्ता ने अपने कार्य को साझा कर स्वच्छ अभियान और पौध रोपण से विद्यार्थियों को अवगत करवाया। वर्तमान समय में समाज में सबसे बड़ी चुनौती शिक्षा का अधिकार है, जिसमें युवा वर्ग अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। डॉ. कृष्ण कुमार गुप्ता ने कहा कि परिवार के साथ जीना सीखें। आपस में बातचीत कर अपने सुखदुःख बांटें। मोबाइल में अपना समय न बिताएं।

स्पीकर सेशन के दौरान महाविद्यालय के एनएसएस प्रभारी डॉ. अनुराग शर्मा और एनएसएस के अध्यक्ष सहित टीम के सदस्य और विद्यार्थी उपस्थित थे।



रामलाल आनंद महाविद्यालय के एनएसएस की ओर से आयोजित वक्ता सत्र में अतिथि संग शिक्षक व विद्यार्थी।

संरक्षक मंडल
प्राचार्य
प्रो. राकेश कुमार गुप्ता
विभागाध्यक्ष
प्रो. राकेश कुमार
परामर्शदाता
डॉ. अटल तिवारी
संपादक
भारती
उपसंपादक
शिवानी